

DPN 5917

Title : अष्ट वाराही स्तोत्र ASTAVĀRĀHĪ STOTRA

Run. No. 6608

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 21.8 x 9.5 Folios 1-2 Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ अस्मै श्री वाराही स्तोत्रे नमः ॥ वसिष्ठा भगवान्नाथिरनुष्टुप दत्त श्रीवाराही

देवता ॐ विजं, ए शान्ति ...

समाप्ति Colophon - इति अष्ट वाराही स्तोत्रम् ॥

१०३.

अष्ट वाराही स्तोत्र

प्रसन्निरत्न वज्राचार्य

शिर ३५१

॥ वारा ॥

॥ १ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्रीवाराहस्तोत्रमंत्रस्य द्वाविंशतिः श्रीवाराहदेवताद्वयं विजंरुशक्तिर्कीकिलकं वाराहिप्रसाद
सिद्धये जपे विनियोगः ॥ वाराहैवैरिसंहारिं शस्त्रवाणाभयं करि ॥ निमिषा
द्वेन वाराहेशत्रुन्मादयमारय ॥ १ ॥ वद्विन्वालाजलनेत्रिममशत्रुं प्रभञ्ज
नी ॥ निमिषाद्वेन वाराहेशत्रुन्मादयमारय ॥ २ ॥ ममशत्रुहृदि नमन्नानाश
स्वराजानि हृदय ॥ निमिषाद्वेन वाराहेशत्रुन्मादयमारय ॥ ३ ॥ मच्छत्रुशो

णि तां पिन्वानि शेषभक्तवत्सले ॥ निमिषाद्वेन वाराहेशत्रुन्मादयमारय ॥
॥ ४ ॥ मज्जामेदरशं पिन्वानि शेषभक्तवत्सले ॥ निमिषाद्वेन वाराहेश
त्रुन्मादयमारय ॥ ५ ॥ शेषितं कृषिपथ्यातिदुष्टवर्गं मसुषतं ॥ निमिषा
द्वेन वाराहेशत्रुन्मादयमारय ॥ ६ ॥ अत्रिस्तूर्यानियानियदेहशोषरा
वैरिनाम ॥ निमिषाद्वेन वाराहेशत्रुन्मादयमारय ॥ ७ ॥ द्युभिरस्थीप
टले देहशोषरावैरिणां त्र ॥ निमिषाद्वेन वाराहेशत्रुन्मादयमारय ॥ ८

॥ वारा ॥

॥ २ ॥

दंष्ट्राकरालवदनेऋषीग्निज्वललोचने ॥ नीमिषाईतवारहि शत्रुमारय
मारय ॥ ९ ॥ खड्गेन शिरविंदितवक्त्रेन विधि कृतया ॥ नीमिषाईतवारहि
शत्रुमारय मारय ॥ १० ॥ मच्छुत्रु सर्वलोकेश जगत्सदन मारये ॥ नीमिषा
ईतवारहि शत्रुमारय मारय ॥ ११ ॥ योगपदं च वाराही मंत्र भानुसहस्रक
म् ॥ सामानुग्रह सामोर्ध्व दद्यात्तिरिपुनाशनम् ॥ १२ ॥ शत्रुमारय यस्तोत्र
यो पठेत्सतत नर ॥ देवि ध्यानपरो भुक्त्वा वदने रिपुनाशनम् ॥ १३ ॥

फरसी पुरत व ज्ञायाय

इति अष्टवारहि मंत्रम् ॥ १३ ॥